**AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science**
ISSN (E):2583:1348, (P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 01| January 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 09-12

# स्त्रियों के सामाजिक परिवर्तन मे ज्योतिराव फुले का योगदान

**Dr. Nisha V. Chaudhary**
Assistant Professor
*Department of Sociology*
Adarsh Art, Science and Commerce College Aheri, Gadchiroli, M.S

## सारांश:

स्त्रियों के बारे में समाज परिवर्तक ज्योतिराव फुले के दिल में परीवर्तन की ज्योत जागृत हुई वह अपने मित्र के साथ मराठवाड़ा के अहमदनगर शहर पहुंचे। उनके मित्रों को सरकारी नौकरी नहीं मिली थी इसलिए दोनों संग वहीं पहुंचे। अहमदनगर में अमेरिकन क्रिश्चियन लड़कियों के स्कूलों को देखने गए जो मिशन द्वारा चलाई जा रही थी। ज्योतिराव फुले ने उस स्कूल की प्राचार्या से मुलाकात कि। उस क्रिश्चियन मिशनरी स्कूल की प्राचार्या का कार्य देखकर वे बहुत प्रभावित हुए और उनके जीवन में यह धारणा बन गई कि यदि स्त्रियों को, लड़कियों को शिक्षा दी जाए तो वह परिवार में पुरानी रूढी, परंपराओंसे और ब्राह्मणों के वेद, पुराण आदि भयंकर रीति-रिवाजों से परिवार में बदलाव कर अन्याय-अत्याचार, सती प्रथा और अपमान भरी जिंदगी से मुक्ति पा सकती है।

## प्रस्तावना:

ज्योतिराव फुले ने अपने परिवार याने माता-पिता और भाई - भाभी से बारबार होनेवाले कलहों से छुटकारा पाना चाहते थे क्योंकी उनके माता-पिता भाई- भाभी केशव भट ब्राह्मण से प्रभावित थे और रूढी - परंपरा के तहत सभी परिवार के सदस्य पीड़ित थे। जिससे ज्योतिराव फुले के क्रांतिकारक विचार उन्हें पसंद नहीं थे परंतु ज्योतिराव फुले की धर्मपत्नी ने स्वयं पती के मार्ग पर चलकर शिक्षा लेने की सोच कर किताबें पढ़ने का कार्य ज्योतिराव से सीखना शुरू किया। इससे ज्योतिराव फुले को नई उम्मीद और उनके मन की इच्छा स्त्रीयोंको शिक्षा देना, उनके लिए स्कूल खोलना पूरी हुई।

उनका सपना उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले से पुरा हुवा। क्रिश्चियन मिशनरीओं के भारत में आने से

| CORRESPONDING AUTHOR: | RESEARCH ARTICLE |
|---|---|
| **Dr. Nisha V. Chaudhary**<br>Department of Sociology<br>Adarsh Art, Science and Commerce college Aheri, Gadchiroli, M.S<br>Email: nishachaudhary@rediffmail.com | |

शुद्रातीशुद्रों को स्कूली शिक्षा प्राप्त करने में बहुत सुविधा हुई। मिशनरियों के शिक्षा कार्य को देखकर उनके आदर्श पर चलते भारत में ब्राह्मणों का विरोध होते हुए ज्योतिराव फुले ने खुद स्कूल खोलकर स्त्रियों को पढ़ाना शुरू किया। समाज व्यवस्था मे एक नई आशा विश्वास को जागृत किया। स्त्रियों को हिंदू परंपरा की अन्यायी एंव अत्याचारी व्यवस्था से बचाने का कार्य ज्योतिराव फुले ने आत्मसम्मान एवं समाज प्रवर्तक के रूप में अपने सपनों को यथार्थ रूप से साकार किया।

21वीं सदी में भारतीय महिला चांद पर पहुंच गई और सभी क्षेत्रों में यानी विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ, न्यायदान तथा साहित्य के रचनाओं में आगे आई है परंतु दुख इस बात का है कि वे वर्तमान में पुरुषों को हैय्य दृष्टि देखने लगी है। अपने अधिकार का दुरुपयोग करके दूसरों को और अपने परिवार सदस्यों को अपमानित करने लगी है। जिन महापुरुषों ने अत्यंत कठीनाई से ब्राह्मणों के परंपरा के खिलाफ जाकर स्त्रियों के लिए स्कूली शिक्षा का अधिकार मिलाके दिए। जिससे समाजसेवी पुरुषों को साथ देने के बजाय वह घमंड और गर्व से भर कर यह भूल गई कि उन्हें समाज के सेवाभावी पुरुषों का आदर सम्मान देकर उन्हें सहकार्य करना चाहिए। पुरुष स्त्री बिना अधूरा और स्त्री पुरुष बिना अधूरी है तो काहे को अपने पढ़ाई का घमंड करना।

## संशोधन उद्देश:

1. ज्योतिराव गोविंदराव फुले के विचारोंको समझना।
2. भारतीय समाज मे स्त्री शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन।

## विश्लेषन:

सत्यशोधक समाज के प्रेरक, चेतना और संस्थापक ज्योतिराव गोविंदराव फुले महाराष्ट्र राज्य के जिला सातारा के कटगुण ग्राम मे पैदा हुए। बचपन से ही उन्हें शिक्षा में रुचि थी परंतु उनके परिवार पर ब्राह्मणभाटों का प्रभाव होने से शिक्षा से उन्हें वंचित रखा गया। उनका जन्म 20 फरवरी 1828 में हुआ हिंदू संस्कृति के धर्म, शास्त्र तथा ब्राह्मण साहित्य सामाजिक रचना के कुरीतियों के विरोध में शुद्रातीशुद्र समाज को जागरूक करने का महान कार्य तथा स्त्री शिक्षा का कार्य उन्होंने इस भारत देश में किया है। उनके 'गुलामगिरी' इस किताब में उन्होंने 'ब्रह्मा' पर कई सवाल उठाया है जो नैसर्गिक विचारों से मेल खाते हैं। ब्राह्मण छोड़कर सभी शुद्रों के इस विचार और आचरण पर भारी आपत्ति उन्होंने उठाई है। स्त्रियों के सामाजिक अधिकार और शूद्रों को शिक्षा का अधिकार यह उनकी इस भारत देश में मौलिक देन है।

उन्होंने अपने परिवार से ही समाज परिवर्तन की शिक्षा-दीक्षा का कार्य शुरू किया था। वह क्रिश्चियन मिशनरीयोंके स्कूल में जाकर अंग्रेजी पढ़ लिखकर सत्य की खोज में लगे रहे। सती प्रथा याने पति की मृत्यु उपरांत उसके शवदाह पर पत्नी को जिंदा जलाया जाना। इस प्रथा पर उन्होंने अंग्रेज सरकार की सहायता से रोक लगाई यह महान कार्य उन्होंने किया है। वह फूलमाली (गार्डनर) समाज के परिवार में पैदा हुए। उनके पिता गोविंदराव फुले तथा माता किसान पुत्र थे हिंदू संस्कृति के वैदिक धर्म के वेद-पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि सभी वांङम्य में कैसे ढोंग भरा है जो

ब्राह्मणों को फायदा दिला कर इस देश के मूलनिवासियोंको, शुद्रातीशुद्र बना के रखा है। इस पर उन्होंने निर्भयता से अपने विचार रखे हैं और लिखे हैं। समाज की दैनंदिन अवस्था और ब्राह्मणों का अत्याचार कपट और भेद नीति का उन्होंने पर्दाफाश किया है।

फारसी शब्दार्थ हिंदू का अर्थ 'लूटखसूट करने वाले लुटेरे' ऐसा किया है। मुगलों ने भी इन्हें इसी प्रकार का नया नाम विधान दिया है। विश्व निर्मिती की झूठी कल्पना जो ब्राह्मणों द्वारा की गई है उस पर ज्योतिराव फुले ने तीव्र विरोध एवं तीव्र प्रतिक्रिया देकर उन्हीं ब्राह्मणों के सामने उन्होंने उनकी और उनके धर्मशास्त्रों की पोल खोल दी है। ज्योतिराव फुले के परिवर्तनशील विचार मानवीय स्वतंत्रता की ओर ले जाने वाले है। हमे ज्योतिराव फुले की विचारधारा तथा कार्य स्पष्ट करते हैं कि आर्य वैदिक संस्कृति एवं धर्म हिंदू यह आसुरी प्रवृत्ति का है जो मानव जाति के लिए सर्वथा घातक है। ब्राह्मण आर्य और उनके धर्म हिंदू के विचारों पर घनाघाती टीका करते रहे हैं, परंतु मानव व्यक्तिवाचक में जो ब्राम्हण उन्हें सहकार्य देते थे या उनके विचारों से प्रभावित थे वें उन्हे अपना ही समझते थे। मानवीय समाज के स्वतंत्रता के लिए उन्होंने ब्राह्मणभट निर्मीत असूरी विचार के वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथों को मानने से संपूर्ण नकार दिया था। हिंदू संस्कृति के वैदिक धर्म के देवता एवं उनके पूजा का विरोध कर शुद्रातीशुद्र को सचेत किया है, कि ब्राह्मणभट्टों की चालाकी और ढोंग भरे लुटेरे धंधे से अपने आप को बचाकर इस गुलामगिरी से बाहर निकलने की चेष्टा करें। भूतकाल हो या वर्तमान या भविष्यकाल ब्राह्मणभटों के विचार समाज में विकृति और भेदभाव की नीति निर्मान करनेवाले रहेंगे, चाहे रूप कैसा भी हो।

## निष्कर्ष:

सामाजिक, संस्कृति और कला के विकास की शिक्षा तथा व्यक्ति के अंतर्मन और बुद्धि के बीच से निकलने वाली नई अभाव और चेतना को जागृत अवस्था में लाने का कार्य सामाजिक केंद्र द्वारा किया जाता है। इतना ही नहीं उन्हें आनेवाले युवाओं को गोंडी धर्म, संस्कार, इतिहास, भाषा के साथ गोंडी धर्म के तत्व एवं तत्वज्ञान की शिक्षा गोटूल संस्कार केंद्र में दी जाती है। यह शिक्षा बालक बालिका तथा युवक-युवतियों को समान अधिकार से पढ़ाई जाती है। इनमें लिंग भेदभाव की गुंजाइश नहीं रहती इससे बंधुभाव एकता और समाज तथा धर्म के प्रति विश्वास पैदा होता है। इन संस्कार केंद्रों को बाहरी दुनिया के विकृत मानसिकता वालों ने बदनाम कर रखा है क्योंकि उनके युवक-युवतियों में आपसी विश्वास नहीं है। गोंड गण समाज की सामाजिक व्यवस्था ही भाईचारे के रिश्ते पर आधारित है यहां लिंग भेद नहीं किया जाता।

## संदर्भ:

१) प्रा. डॉ. देशमुख सुदर्शन : "आदिवासी समाजाचे दारिद्र" निर्मल प्रकाशन, नांदेड, (२००७)
२) डॉ. गारे गोविंद : "पैनगंगा नदीच्या खोऱ्यातील आंध आदिवासी" श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे. (२००१)
३) डॉ. कुलकर्णी शौनक : "महाराष्ट्रातील आदिवासी" डायमंड पब्लिकेशन, पुणे, (२००९)

४) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२))

५) प्रा. सरकुंडे माधव : "आदिवासी अस्मितेचा शोध" देवयानी प्रकाशन, यवतमाळ, (२०११)

६) डॉ. सौ. देवगांवकर शैलजा, डॉ. देवगांवकर एस. जी. : "आदिवासी विश्व" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१५)

७) डॉ. आगलावे प्रदीप : "आदिवासी समाजाचे समाजशास्त्र" श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, (२०१२)

■ ■ ■